International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 10, Oct 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संगीत पर्यावरण और प्रदूषण

डॉ0 अम्बिका कश्यप
एसोसिएट प्रोफेसर
गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज
यमुनानगर।

संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियां और सांगीतिक सांस्कृतिक परंपराओं का मूर्तिमान प्रतीक है। यह आदिम काल से जन–जीवन के आत्मिक उल्लास और सुख अनुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का माधुर्तम माध्यम रहा है । शास्त्रीय स्थापना के अनुसार– ''गीतं वादमं तथा नृत्यं त्रयं संगीतम उच्चयते''। गायन, वादन तथा नर्तन की त्रिवेणी संगम ही संगीत है ।

संगीत के इस त्रिवेणी संगम का विस्तार असीम अछोर तथा अविनश्वर है। मानव भाव में ही नहीं प्रयुक्त समूची सृष्टि और प्रकृति के कण–कण में संगीत सरिता का कर्णप्रिय कल–कल निनाद व्याप्त है। ओंकार रूप सार्वभौम सत्ता को ही नाद ब्रह्म की संज्ञा दी गई है । विश्व की विभिन्न मानव जातियों का अनेक धर्म विधाताओं की पूजा अर्चना और भक्ति साधना का माध्यम गायन संगीत ही रहा है। संगीत की यह भावात्मक एकता एक सार्वभौमिक, सर्वकालिक आत्मीयता और बंधुत्व की प्रतीक है। संगीत एक ऐसा विश्व व्याप्त स्नेह सूत्र है जो हर समय विश्व की प्राकृतिक निधि और मानवीय असंगति को एक मधुरत्तम और मौलिक एकता की अनुभूति से आबद्ध करता है। संगीत कला आदिकाल से ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। इसका इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव । यह हृदय के सूक्ष्मतम और उच्च कोटि भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। इसके द्वारा किसी देश की तत्कालीन संस्कृति एवं सभ्यता का यथेष्ट परिचय मिलता है क्योंकि उसे देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का प्रभाव प्रत्येक मनुष्य के रग–रग में संचारित होता रहता है। यह केवल किसी व्यक्ति के शारीरिक अथवा मानसिक विकास का साधन ही नहीं वरुण उसके आध्यात्मिक विकास का भी अचूक साधन है। इससे व्यक्ति को लौकिक हित ही नहीं पारलौकिक हित भी प्राप्त होता है। अर्थात संगीत द्वारा कोई भी व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त हो सकता है। इससे केवल मनोरंजन ही नहीं शरीर के प्रत्येक रोगों का निवारण बड़े ही सरलता के साथ हो सकता है। इसमें वह आकर्षण है कि जो केवल मनुष्य को ही नहीं पशु पक्षियों को भी मुगध कर लेता है। मृग इसके स्वरों में इतना तल्लीन हो जाता है कि अपने प्राण तक निछावर कर देता है । सर्पों के कान ना होते हुए भी तुम्बी नाद से वह इतना प्रभावित हो जाता है कि अपने कुटिलता को भूल जाता है और आनंद में हिलौर, निराशा में आशा तथा दुख में सुख का भास करता है ।

सामवेद स्वर में सामवेद के गायन से उनमें ईश्वर भक्ति, आत्मिक उल्लास और दिव्य ओज का संचार होता था। सामवेद के मन्त्रों के गायन द्वारा असाध्य रोगों का उपचार भी किया जाता था । संगीत की चरम सिद्धि ने रागों की प्रभावशीलता को इतने अलौकिक समर्थ से संप्रकृत कर दिया था कि रागों के द्वारा

दीप प्रज्वलित और वर्षा को न्योतन की संभावनाओं के क्षेत्र मनुष्य ने छू लिए थे। यही नहीं उत्तम कृषि के लिए भी सामवेद के मन्त्रों का गायन किया जाता था। संगीत की इस महान उपलब्धि का मूलाधार प्रकृति और संगीत के पारस्परिक रागाात्मक संबंधों की मुखरित और आप्लावित कर सकने की साधना थी। पारस्परिक रागात्मक संबंधों को जागृति कर मनुष्य और प्रकृति को प्रभावित, परिष्कृत और उर्वरक बनाया जा सकता है। इस वैज्ञानिक सत्य को संगीत साधना ने एक नई सार्थकता दी । धीरे–धीरे आज वैज्ञानिक भी इस सत्य को स्वीकार करने लगे हैं कि संगीत के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति को वशीभूत किया जा सकता है । पेड़ पौधों की उत्पादन शक्ति को अधिकतम सीमा तक पहुंचाया जा सकता है ।

चिरकाल से संगीत और प्रकृति का घनिष्टतम संबंध रहा है। संगीत स्वर और ताल का सुंदर समन्वय है । ताल लय का ही दूसरा नाम है । ताल अथवा निश्चित क्रम प्रकृति का एक मुख्य नियम है। पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा में, दिन रात के बीतने में, ऋतुओं के परिवर्तन में यह पूर्ण रूप से देखने को मिलता है। गायक जब किसी राग का आरंभ करते हैं तो समय अनुसार प्रयत्न करते हैं कि आमुख राग निर्धारित समय पर ही गाया बजाया जाए ।

संगीत का प्रधान अंग स्वर है । स्वरों के योग से रागों की उत्पत्ति होती है। राग और प्रकृति का अटूट संबंध है। इन रागों का समय विभाजन गायक और श्रोता के शारीरिक और मानसिक दिशाओं का आधार लेकर किया गया है। राग में विकृत स्वरों का प्रयोग भी प्रकृति के नियमों पर आधारित है । राग–रागिनियों के स्वरूप और उनके गाने का समय संगीताचार्यों ने गहरी वैज्ञानिक खोज और अनुभव के बाद बांधा है। दिन–रात के 24 घंटे हैं और प्रति 4 घंटे के बाद काल की प्रकृति व तापमान बदलता चला जाता है। प्रातः काल कफ का प्राधान्य होता है ज्यों–ज्यों दिन बढ़ता चला जाता है कफ घटता है और पित्त बढ़ता है। मध्यान काल में पित्त अपने यौवन पर होता है। इसके बाद संध्या काल में पित्त घटता है तथा वायु की प्रधानता शरीर में अधिक बढ़ने लगती है । प्रातः काल प्रकृति स्वच्छ सौम्य होती है । दोपहर को तापमान बढ़ जाता है। इस समय की प्रकृति के अनुसार ही उसके ठंडे, गरम, तर व खुश्क प्रभाव वाले स्वरों के साथ राग–रागिनियों की रचना की गई।

प्रकृति पर होने वाला हर प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर, नित्य कर्मों पर होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि प्रकृति के साथ एक बहुत बड़ा शब्द जुड़ गया है 'प्रदूषण' । वह प्रकृति जिसको देखकर या इसके साथ जुड़कर यह मानव शरीर स्वतः ही सर्फूत हो जाता, आज वह कई विकारों से युक्त हो गया है और समाज का संगीत वर्ग उससे अछूता कैसे रह सकता था। गायक हो ,वादक हो अथवा नृतक हो, कहीं ना कहीं सभी प्रदूषण की समस्या से अपनी प्रतिभाओं का ह्रास होते हुए देख रहे है । गायक का कोकिल कंठ अब कोकिल नहीं सुनाई देता क्योंकि उसमें जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण भी अपना–अपना स्वर प्रस्तुत करते हैं। वादक की शारीरिक क्षमता में सूर्य की स्वच्छ किरणें ना मिल पाने से विटामिन d3 गुम हो गया है। पुराने समय में जब भी किसी कलाकार से मिलते थे तो उनसे नए रागों पर चर्चा होती थी किंतु आज नए रोगों पर चर्चा होती है।

ओजोन लेयर के नष्ट होने से केवल वनस्पति पर ही नहीं अपितु हर क्षेत्र पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ा है। वह क्षेत्र फिर संगीत का हो या साहित्य का वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके हैं ।

नई दिल्ली भारत की राजधानी हमेशा से प्रसिद्ध नगरी रही है। पिछले कुछ वर्षों में वहां एक और शब्द सुनाई देने लगा है जिसका नाम है 'स्मॉग'। सरकार द्वारा यह नारा की ''स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने, देश से अपने यह वादा कर लिया हमने'' स्मोग के विपरीत ही नजर आ रहा है। 2020 में श्रीमती कौशिकी चक्रवर्ती जी द्वारा राज सा फाउंडेशन में कार्यक्रम की प्रस्तुति के दौरान उनका कंठ इस कदर प्रभावित हुआ कि उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पेज पर दिल्ली में होने वाले अगले कार्यक्रम को स्थगित करते हुए दिल्ली संगीत प्रेमियों से क्षमा मांगी । जिसका कारण केवल एक था प्रदूषण आज से पहले या आज तक इस तरह की कोई भी प्रतिक्रिया लिखित रूप में सामने नहीं आई थी। वर्तमान स्थिति यह है कि हम ज़हर खा रहे हैं ,ज़हर पी रहे हैं तथा ज़हर ही सुन रहे हैं। सारा वातावरण प्रदूषण से सड़ रहा है। धरती उजड़ रही है ,आकाश बिगड़ रहा है। कहां जाए ,कहां रहे कुछ समझ नहीं आता। क्या केवल पेड़ लगाकर ,गोष्ठियों का आयोजन करके विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय में प्रचार– प्रसार करके या गांव और शहर की दीवारों पर कुछ नारे लिखकर हमारे कर्तव्य की पूर्ति होगी , नहीं यह तभी संभव होगा जब लगाए गए पेड़ पूरी तरह से सुरक्षित होंगे। गोष्ठी में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा लिया गया प्रण प्रतिदिन प्रतिक्षण उसके जीवन में फलित होगा और साथ ही यह प्रण भी लिया जाएगा कि प्रत्येक व्यक्ति प्रति घंटा, प्रति मिनट, प्रति सेकंड सुंदर प्रकृति को प्रदूषण से रिक्त रखेगा। सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं में अपना पूर्ण सहयोग देगा तभी इन पंक्तियों की सार्थकता को हम साबित कर पाएंगे –

सुंदर खजियार बसा चंबा की घाटी में
फूलों की गंध उड़ी सोने की माटी में